।। पप्पू जी चले छुट्टी पे ।।

अपना पप्पू गया है थक, करके इतनी बक-बक,
निकल पड़ा है फिरसे अब, क़ौमिक्स लेके पूरे सब!

भैया मुझे भी चाहिए छुट्टी, इन चमचों से दूर,
सारे मेरे सपनों को, किया इन्होंने चकना चूर!

मुझे भाता छोटा भीम, और थाईलैंड का वर्जिन बीच,
कहाँ दिया है पटक मुझे, ये नमो-जेटली-ममता बीच!

दीदी आती नहीं मदत को, अब अम्माँ भी बीमार,
जीजा साला मज़े कर रहा, पूरी हवा निकाल!

राजनीति के पापड़ देखो, मुझसे ना बेले जाते,
इससे तो अच्छा था, हम इटली में ही बस जाते!

भाषण रटना, शायरी करना, नहीं है मेरे बस का,
सुनसुन कर नमो का भाषण, खिसका जाए भेजा!

बन गया हूँ धोबी का अब, घरका हूँ ना घाटका!
संकट में मैं फँसा हूँ भैया, छोड़ो पीछा जान का!

करवाकर बौड़ी स्पा-मसाज, लौटूँगा मैं अगले साल,
लगवाकर जनता दरबार, चलूँगा नए मैं पेंतरे-चाल!

पप्पू जी के पुनः अवकाश लेने की सुमंगल बेला पर.....

उनके सकुशल लौट आने की आशा और

नव वर्ष की बधाइयों के साथ,

समीर खांडेकर

३१.१२.२०१६